(i)

Lecture Series NOs:- 56

Online class
Date - 9|2|2022
Day - Monday
Time = 10:20 to 10:50
A.M.

TOPIC,

(1) Kumaril,

Dr. Sunita Kumari
Department of Philosophy
B.A Part - I
Paper - I (H.)
A.N.D College Shahpur
Patory, Samastipur,

Ans:- कर्म मीमांसकों के मतानुसार स्वर्ग ही जीवन का चरम लक्ष्य माना गया है,

कुमारिल के अनुसार अनुसार 'अपूर्व' अदृश्य शक्ति है जो आत्मा के अंदर कर्म सिद्धांत (Law of Karma) कहा जाता है।

'अपूर्व' सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक कारण में शक्ति निहित है तो क्यों नहीं सर्वदा बीज से वृक्ष का आविर्भाव होता है।

मीमांसा इसका कारण बाधाओं का उपस्थित होना बतलाती है। जिसके कारण शक्ति का ह्रास हो जाता है।

P.T.O

मीमांसा इसको आत्मा की उपस्थित होना बतलाती है, जिसके कारण शक्ति का ह्रास हो जाता है (सूर्य में) सूर्य पृथ्वी को नहीं आलोकित कर सकता है। अपूर्व सिद्धान्त सार्वभौम नियम है, जो मानता है कि बाधाओं के हट जाने से प्रत्येक वस्तु में निहित शक्ति कुछ-न-कुछ फल अवश्य देगी। 'अपूर्व' को संचालित करने के लिए ईश्वर की आवश्यकता नहीं है, यह स्वयं संचालित है। 'अपूर्व' की सत्ता का ज्ञान वेद से प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त अर्थापत्ति भी 'अपूर्व' का ज्ञान देता है। शंकर ने 'अपूर्व' की आलोचना यह कहकर की है कि 'अपूर्व' अचेतन है etc.

"END"